IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11, S.Iss 07, 2022

हिन्दी गद्य साहित्य में दिव्यांग विमर्श

–डॉ. ओम मिश्र
–शरद कुमार मिश्र

दिव्यांग विमर्श विषयक लेखन से संबंधित आज अनेक कहानियां उपलब्ध हैं–जैसे 'पोलियो', 'पर कटा परिंदा', 'रोशनी से दूर', 'पड़ाव', 'समापन', 'अमीबा', 'आधा हाथ पूरा जीवन', 'अन्ना', 'कण्ठहार', 'लुंज', 'छोटू', 'अंधेरे का सैलाब', 'फरिश्ते', 'इरा' आदि प्रमुख दिव्यांग कहानियाँ है। दिव्यांग विमर्श विषयक लेखन से संबंधित आज अनेक कहानियां उपलब्ध हैं।

हिन्दी कथा साहित्य में विकलांग पात्रों की समस्याओं के निरूपण के लिए डॉ. नामवर सिंह का कथन सटीक प्रतीत होता है–''अभी तक जो कहानी कहती थी या कोई चरित्र पेश करती थी अथवा एक विचार को झटका देती थी, वही जीवन के प्रति एक नया भाव बोध जगाती है।'' दिव्यांगता विषयक कहानियों में विषयों की विविधता के साथ–साथ नयापन भी है। दिव्यांगता विषयक कहानीकार विषय की यथार्थता के प्रति प्रतिबद्ध है। विकलांगता विषयक कहानी लेखन में उषा प्रियम्बदा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोवती, शिवानी, मेहरून्निसा परवेज, मृदुला गर्ग, ममता कालिया, सुधा अरोड़ा, कृष्णा अग्निहोत्री, मंजुल भगत, मृणाल पाण्डेय, मालती जोशी, मणिका मोहनी, निरूपमा सोवती जैसी लेखिकाओं का नाम भी प्रमुख है।

स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी में दिव्यांग–विमर्श है। दिव्यांग विमर्श के अन्तर्गत क्रमशः निम्न बिन्दु आते हैं कि कुछ विकलांगता को पूर्व जन्म का पाप मानते हैं तो कुछ इसे एक संरचना मात्र। दिव्यांग–विमर्श संरचना पर आधारित है। जयशंकर प्रसाद की 'मधुआ' कहानी इसी प्रकार की विचारधारा को प्रमुखता देती है। गूंगे व्यक्तियों को उचित काम प्रदान करने की वकालत करती है।[1] ''ये गूंगे–अनेक–अनेक हो, संसार में भिन्न–भिन्न रूपों में छा गये हैं जो कुछ कहना चाहते हैं और कह नहीं पा रहे हैं। जिनके हृदय की प्रतिहिंसा न्याय और अन्याय को परखकर अत्याचार को चुनौती नहीं दे सकती है। क्योंकि बोलने के लिए स्वयं होकर भी स्वर में अर्थ नहीं है, क्योंकि वे असमर्थ है।''[2]

धर्मवीर भारती की एक कहानी 'गुलकी बन्नों' भी एक दिव्यांग लड़की की दिव्यांगता की तरफ इशारा करती है। यदि उस लड़की को उसके कूबड़ेपन से मुक्त रखा जाय या उसको कुवड़ेपन का निन्दनीय आभास न कराया जाए तो वह अवश्य ही उच्चकोटि की नागरिक बन सकती है।[3] ये कुवड़ी (गुलकी) फिर भी समाज से लगातार लड़ रही है। वह पति से दूर रहकर लगातार संघर्षरत है। यथा–''ये कुवड़ी, ये कुवड़ी। अपना कुवड़ दिखाओं ऐसा कहते हुए वह उसकी पीठ पर एक मुट्ठी धूल फेंक देता है।''[4] गुलकी को उसके पति ने छोड़ दिया है। वह निर्वासित और नितांत अकेले जीवन जी रही है।

रांगेय राघव की कहानी 'पंच परमेश्वर' भी समाज को एक काने दिव्यांग की महत्वा का आभास कराती है शहर में उस काने व्यक्ति की इज्जत है। वह व्यक्ति लगातार सम्मान का पात्र माना जाता है।[5]

विष्णु प्रभाकर की कहानी 'नेत्रहीन' भी इसी प्रकार के नेत्रों से दिव्यांग व्यक्ति की गाथा का वर्णन करती है जो प्रत्येक कार्य को करने में में पूर्ण समर्थ है। अपना सारा कार्य वह स्वयं ही कर लेता है। कुएं से पानी भरकर लाना, गर्मियों में पंखा चलाना, वह भी वैसे वाले पंखें जो हाथ से रस्सी खींचकर चलाए जाते हैं–इसमें विष्णु प्रभाकर जी ने उस चक्षु दिव्यांग व्यक्ति की पानी भरने की क्षमता तथा गर्मी में अपने

हाथों से पंखा चलाने की क्षमता आदि का वर्णन किया है। वह दिव्यांग इतना प्रवीण था कि पानी भरने वाले कुएं पर मटका लेकर बिना किसी जगह पर रूके और गिरे हुए पहुंच जाता था और पानी भरकर वापस आ जाता था। वह अपने मालिक तथा उसके परिवार के लिए गर्मियों में पूरे दिन रस्सी खींचकर पंखा चलाता रहता था।[6]

इसी प्रकार दिव्यांग पात्रों की समस्याओं की आधार बनाकर खूब लेखनकार्य हुआ है। इन कहानियों में दिव्यांगों के जीवन की समस्याओं को आधार बनकर खूब लेखन कार्य हुआ है। इनमें उनके जीवन की आर्थिक, सामाजिक, षैक्षिक, स्वास्थ्य आदि बहुत सी समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। यदि दिव्यांग पात्रों को उचित प्रशिक्षण दिया जाए तो वे समाजोपयोगी हो सकते हैं। स्वातन्त्रयोत्तर दिव्यांग पात्रों के जीवन पर भीश्म साहनी, सूर्यबाला, विवेक, सोम, कल्पना, काशीराम मिश्र आदि लेखक दिव्यांगता विषयक लेखन कर रहे हैं। प्रो. विनय कुमार पाठक, प्रोफेसर सुरेश माहेष्वरी व अन्य अखिल भारतीय चेतना परिषद् के लेखक भी दिव्यांग विमर्श–विषयक लेखन कर रहे हैं।

रांगेय राघव की कहानी 'गूंगा' में भी श्रवण दिव्यांग व्यक्ति के गुणों का वर्णन किया गया है–हिन्दी उपन्यासों में विलकांगों के जीवन पर चर्चा की गई है। रांगेय राघव ने अपनी कहानी गूंगे में एक गूंगे लड़के के जीवन का वर्णन किया है जो गूंगा होने के कारण अपने विचारों को व्यक्त करने में असमर्थ है। इस कहानी में उन्होंने यह दिखाया है कि किस प्रकार एक गूंगा लड़का समाज के द्वारा शोषित किया जाता है। यह गूंगा बच्चा अनाथ है। एक महिला दया दिखाते हुए उसे काम पर रख लेती है। परन्तु उसका शोषण जारी रखती है। परेशान होकर वह गूंगा काम छोड़कर चला जाता है। वह अपने बुआ और फूफा के द्वारा पाला–पोषा जाता है इसी कारण उसके बुआ और फूफा यह चाहते हैं कि उसका प्रयोग वे पैसे कमाने के लिए करे। गूंगा दिव्यांग बाजार में पल्लेदारी करता है और कुछ पैसे कमा कर लाता है जिससे उसके बुआ और फूफा अपना खर्च चलाते है। उसके बूआ और फूफा उस पर लगातार अत्याचार करते है और वह परेषान होकर घर से भाग जाता है। जैसा कि कहानीकार ने स्पश्ट किया है–''लेकिन एक दिन वह औरत गूंगा पर चोरी का इल्जाम लगाकर उसे मारती–पीटती, धक्का देकर यह कहकर घर से निकाल देती है कि मक्कार बदमाश पहले कहता था कि भीख नहीं मांगता है। रोज–रोज भाग जाता है पत्ते चाटने की आदत बन गई है। कुत्ते की दुम कभी सीधी नहीं होती। नहीं–नहीं रखना है हमें। तू जा इसी वक्त निकल जा।''[7]

ममता कालिया की कहानी 'राजू' भी एक दिव्यांग व्यक्ति के जीवन का वर्णन किया गया है। उसकी एक आँख पूर्णतः खराब है उसमें कुछ दिखाई नहीं देता फिर भी वह दूसरी आँख से देखता है क्योंकि दूसरी आँख में उसके उम्र के साथ–साथ मोतिया की बीमारी के कारण कम दिखाई देता है वह इस कारण उपहास का पात्र बनता है उसे सभी हीन देखते हैं उसके गुणों को कोई भी ध्यान में नहीं लाता। उसे लोग अपशकुन मानते हैं उसे तथा उसकी माता को भी इसका परिणाम भोगना पड़ता है। जैसा कि निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है–''ये काना कपूत घर में छोड़ आती तो एक दिन में तेरा दूध नहीं सूख जाता। विवाह के घर में लाकर खड़ा कर दिया सामने।''[8] इसी प्रकार स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानियों में फणीष्वरनाथ रेणू की कहानी 'ठेस' भी एक सिरचन नाम की दिव्यांग का वर्णन करती है। वह मुंह से तुतलाकर बोलती है। वह एक मूक दिव्यांग है। लेखक ने उसकी दिव्यांगता का वर्णन किया है।[9] अतः स्वातंत्रयोत्तर कहानीकारों में फणीश्वरनाथ

रेणु भी सशक्त हस्ताक्षर हैं। कहानी 'ठेस' में सिरचन नाम की पात्रा की दिव्यांगता का चित्रण लेखक ने किया है।

मैत्रेयी पुष्पा की कहानी 'सहचर' विकलांगता के समानुभूति विषयक मॉडल पर बात करती है जिसमें विकलांग व गैर विकलांग व्यक्ति साथ–साथ रह सकते हैं इसमें विकलांग स्त्री की होशियारी को न देखकर लोग उसकी शादी विकलांग होने के कारण एक अनपढ़ वंशीलाल नामक व्यक्ति से कर देते हैं परन्तु वंशीलाल विकलांगता के आधुनिक मॉडल, समानुभूति विषयक दर्षन का पालक है वह अपनी पत्नी को सम्मान देता है व उसको गुणवान मानता है तथा जीवन भर उसका साथ निभाने का वचन देता है। निश्चित रूप से कहानी अत्यन्त प्रेरणादायक व विकलांगता के आधुनिक मॉडल पर अमल करती प्रतीत होती है।

ओमप्रकाश भाटिया की कहानी में वृद्ध लोगों को जीवन के बारे में चित्रण किया गया है जो वृद्ध होने के साथ–साथ उससे विकलांग है। भीख मांगने का कार्य कराया जाता है परंतु वह यह कार्य करना नहीं चाहता है। वह बार–बार कहता है कि वह अन्य कार्यों को करने मे निपुण है वह होशियार है पैरों से असमर्थ अवश्य है।[10]

जया जादवानी की कहानी 'साक्षी' में भी दिव्यांगत महिला के जीवन का वर्णन है। वह पोलियों से परेषान है व होशियार अवष्य है। वह उसमें सम्पूर्ण घर का संचालन कर लेती है। वह इतना निपुण है कि घर को सम्पूर्ण रूप से व्यवस्थित करने का धर्म वह करती है।[11]

जया जादवानी की कहानी साक्षी में भी एक पोलियों से दिव्यांग महिला के जीवन का वर्णन किया गया है। पोलियों ग्रस्त होने के बावजूद भी महिला काफी होशियार है वह अपना संपूर्ण घर व्यवस्थित? रूप से संचालित कर रही है। इस कहानी का मूल मंत्र यह है कि एक दिव्यांग व्यक्ति अपनी दिव्यांगता के वावजूद समाज में सब कुछ कर सकता है। यदि उसे उचित अवसर और प्रेरणा प्रदान की जायें। इसी प्रकार रतन कुमार सावरिया की कहानी 'सलाखे' में एक अंधे दिव्यांग के जीवन का वर्णन है। इस कहानी में बीमा शर्मा नामक महिला और जमन वर्मा नामक व्यक्ति के प्रेम विवाह का वर्णन है। इस कहानी में दोनों अलग–अलग जाति के होने के कारण प्रेम विवाह तो कर लेते है परन्तु उन्हें समाज में बेमेल विवाह के दुष्परिणामों को भोगना पड़ता है। यद्यपि यह पति–पत्नी दोनों दृष्टि दिव्यांग है और दोनों की जातियां अलग–अलग है इसी कारण समाज उनकी दिव्यांगता को न पहचान कर उन्हें परेशान करना शुरू कर देता है।[12]

महादेवी वर्मा की कहानियों में भी दिव्यांगता की खूब खुषबू आती है। उन्होंने दिव्यांग पात्रों को आधार बनाकर दो–तीन कहानी लिखी हैं 'गुंगिया', 'अलोपी' दोनों कहानियों में दो पात्र हैं एक पात्र का नाम गुंगिया है जो जन्म से श्रवण विकलांग है। उसकी विकलांगता के कारण से लोग उसे बेकार की वस्तु मानते हैं। उसकी षादी उसके पिता किसी प्रकार एक व्यक्ति से कर देते हैं। वह व्यक्ति व उसके घर वाले उसकी विकलांगता से परिचित नहीं थे। जब वे उसकी विकलांगता को जानते हैं तो उससे गलत व्यवहार करते हैं उसका पति उसे छोड़ देता है। इस बीच उसके पिता उसकी बहन (गुंगिया) की षादी उसके पति से कर देते हैं तथा एक पति व दोनों लड़कियों को एक साथ रख देते हैं। गुंगिया अपनी बहन को पति के साथ देखकर दुखी तो है फिर भी वह अपने बहन व पति दोनों के साथ प्रेम करती है। उसकी बहन कुछ वर्शों बाद मर जाती है और गुंगिया ही उसके पुत्र की सेवा करती है। बड़ा होकर उसका पुत्र भी गुंगिया

का शोषण करता है वह उसकी ममता का भरपूर दोहन करता है। गुंगिया इसे पुत्रवत् मानकर उसकी याद में मर जाती है।[13]

इसी प्रकार अलोपीदीन नामक पात्र दोनों आँखों से अंधा है फिर भी उसकी स्पर्श षक्ति बहुत जबरदस्त है वह सभी काम छूकर ही कर लेता है। इलाहाबाद के छात्रावास में वह प्रतिदिन महादेवी वर्मा को सब्जी देने आता है व छात्रावास की लड़कियों को भी वह प्रतिदिन सब्जी देता है। इससे प्रभावित होकर महादेवी वर्मा ने उसे नियमित सब्जी, देने वाला कर्मचारी नियुक्त कर लिया है। वह अपना सारा काम स्वयं करता है व अपने फुफेरे भाई रग्घू के साथ उंगली पकड़कर सभी जगहों को जाता रहता है। रग्घू मात्र उसको गतिशील बाधाओं से पार कराता है। रग्घू अपने स्वमित्रवत् आलोपी को खेतों में बैठाकर चला जाता है। वह सब्जी उगाता है नई पौध लगाता है, धनिया, मिर्चा, मूली, गोभी बोकर नई फसल प्राप्त करता है।

गुंगिया पात्रा भी उच्चकोटि की है व अलोपीदन भी उच्चकोटि का पात्र है–''गुंगिया का नाम धनपतिया है। अलोपी का भी नाम अलोपीदीन है जो सामान्य व्यक्ति की तरह ही है। कहानी में महादेवी वर्मा ने मनोविश्लेषणात्मक ढंग से अलोपी के मन की यौन इच्छाओं को व्यक्त किया है। अलोपी ने एक स्त्री से विवाह किया क्योंकि वह स्त्रियों को महत्वपूर्ण मानता है कि स्त्री उसे सुख दे सकेगी। परन्तु स्त्री ने उसे दगा दिया पहले स्त्री ने उसे अपनी माँ से दूर रख लिया। अलोपी ने अपनी इस पत्नी के चक्कर में अपनी माँ को छोड़ दिया। वह धन भी कमाता है इस प्रकार अलोपी अपनी निपुणता से रोज धन कमा कर लाता है वह उसकी पत्नी छीन लेती है। वह इस तरह अलोपी का धन 6 माह तक इकट्ठाकर भाग जाती है।

'गुंगिया' अपने पिता की एकलौती संतान थी। बचपन से ही गूंगी हो गयी वह पहली संतान है। वह गुणवान है फिर भी विवाह की समस्या उसकी एक बहुत बड़ी समस्या है। इस प्रकार विकलांग लड़कियों की विवाह की समस्या बड़ी समस्या है। उनकी दिव्यांगता को कोई नहीं पहचानता। इस कारण वे परेशान रहती है।

इसी प्रकार गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'भिखारिन' कहानी में भी एक वृद्ध दिव्यांग महिला के जीवन का वर्णन किया गया है। महिला दिव्यांग है तथा खूब होशियार है। उसमें स्वावलम्बन का गुण है। वह नित्य प्रति अपना जीवन स्वयं जीती है वह अपनी झोपड़ी तक स्वयं लाठी टेककर चली जाती है–''प्रातः से संध्या तक वह इसी तरह हाथ फैलाएं खड़ी रहती। इसके पश्चात् मन ही मन भगवान को प्रणाम करती और अपनी लाठी के सहारे झोंपड़ी का पथ ग्रहण करती। उसकी झोंपड़ी नगर के बाहर थी। वह रास्ते में भी याचना करती जाती।''[14]

विकलांग होने के वावजूद भी वह कभी निराश व हताश नहीं होती थी–''किन्तु राहगीरों में पैसे देने की अपेक्षा हीन दृष्टि से देखने वालों की संख्या अधिक होती है फिर भी झिड़कियाँ पाकर वह निराश न होती। झोंपड़ी तक पहुँचने तक उसे आशा रहती कि कुछ न कुछ धन वह अवश्य इकट्ठा कर लेगी।'' उपरोक्त भावना ही दिव्यांग को दिव्यांग बनाती है। दिव्यांग गुण उस वृद्ध भिखारिन में कूट–कूट कर भरे हैं। वह ममत्व की अथाह सागर है। इसकी मात्रा उसके अन्दर खूब है जो एक घटना से और बढ़ जाती है। उस भिखारिन का एक पुत्र था जो एक दिन बीमार पड़ गया। भिखारिन उसकी दवा के लिए एक सेठ के पास रखे अपने पैसों को माँगने जाती है क्योंकि वह भीख माँग–माँगकर इसी सेठ के पास पैसे इकट्ठा करती

थी क्योंकि बैंक न होने के कारण लोग सेठ–साहूकारों को पास ही पैसे जमा करते थे। यह महिला भी सेठ के पास जैसे जमा करती थी। सेठ बेईमान किस्म का आदमी था। भिखारिन महिला को एक दिन एक बालक मिला जो किसी कारणावश खो गया था। अपनी पूरी कोशिश करके महिला उसकी सेवा करती है–''झोंपड़ी के पास पहुँचते ही एक दस वर्ष का लड़का उछलता–कूदता आता है और उससे लिपट जाता है। अंधी टटोलकर उसके मस्तक को चूमती है।''

इस बात से कोई परिचय नहीं था। पाँच वर्ष हुए पास पड़ोस वालों ने उसे अकेला देखा था। इन्हीं दिनों एक दिन संध्या समय लोगों ने उसकी गोद में एक बच्चा देखा। वह रो रहा था। अंधी उसका मुख चूम–चूमकर उसे चुप कराने का प्रयत्न कर रही थी। अतः किसी ने न पूछा कि बच्चा किसका है। उसी दिन से बच्चा अंधी के पास था और प्रसन्न था। उसके वह अपने से अच्छा खिलाती और पहनाती। वह इतनी होशियार व निपुण है कि अपना धन जमीन में एक वर्तन में गाड़कर रखती थी तथा अनाज इकट्ठा कर रख लेती जिससे उसका समय आराम से पार हो जाता था। सम्पूर्ण रातभर वह बच्चे की देखरेख करती थी। उसने अपनी झोंपड़ी में एक कोने में एक हाड़ी खोदकर गाड़ रखी थी उसी में रोज–रोज वह अपने पैसे इकट्ठा करती। वह अपने कार्यों को भी करती रहती जो एकदम समय पर व अनुशासनमय होते थे। प्रातः उठना बच्चे को खिला–पिलाकर मंदिर के द्वार पर नियमित पहुँच जाना।

रचना की इस स्त्री पात्र की तुलना हम प्रेमचन्द के उपन्यास 'रंगभूमि' के सूरदास व अमृतलाल नागर के उपन्यास 'खंजन नयन' के सूरे से भी कर सकते हैं। जिस प्रकार यह बुढ़िया भिखारिन दिव्यांग है उसी प्रकार प्रेमचन्द का सूरदास भी खूब प्रवीण व दिव्यांग है। उसमें सारे गुण समाहित हे जिस प्रकार सूरदास, अंग्रेजों से व अन्यों से लड़ता है। उसकी झोपड़ी जला दी जाती है, वह त्यागी व अन्य लोगों से सहानुभूति रखने वाला स्नेह करने वाला व कर्तव्य परायण व्यक्ति है। इसी प्रकार अमृतलाल नागर की रचना 'खंजन नयन' का पात्र, सूरे भी त्यागी, जीवट व स्नेह करने वाला कर्तव्यनिष्ठ व स्वावलम्बी व्यक्ति है। इसी प्रकार गुरुवर रवीन्द्रनाथ टैगोर की यह पात्रा 'भिखारिन' भी जीवट, त्यागी, स्वावलम्बी, कर्तव्यपरायण पात्रा है।

एक विकलांग व्यक्ति में भी दिव्यांगता हो सकती है। इस भिखारिन महिला के अन्दर वे सारे दिव्यांग गुण थे वह महानता की पराकाष्ठा थी व दिव्य गुणों का भण्डार थी। कितनी जीवन्त शक्ति थी इस महिला मात्र में। वह दृढ़ संकल्प वाली, ऐवरेस्ट पर्वत जैसी संघर्शषील महिला थी। जब उस सेठ ने महिला के धन की पोटली उसे न दी तो भी उसने हार न मानी वह लगातार सेठ के दरवाजे पर अपने बीमार पुत्र को लेकर गई तथा धरना देकर बैठ गई। बैठे–बैठे उसे ध्यान आया उसने बच्चों को अपनी गोद में उठा लिया। और ठोंकरें खाती गिरती–पड़ती, सेठ के पास पहुँची। वह उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गई। बच्चे का शरीर ज्वर से भभक रहा था और अंधी का कलेजा भी। यह सब देखकर सेठ स्वयं उसे अपने घर से भगाने आए तब तक उन्होंने देखा कि बच्चे की जांध पर वैसा ही तिल बना था जैसा सेठ के बच्चे को ठीक काने के लिए लाखों रुपये लगा दिए तथा मंहगे डॉक्टर से दवा करायी परन्तु बच्चा मात्र अपनी अंधी माँ भिखारिन महिला को ही याद कर रहा था। भिखारिन से सेठ के बुलाने पर उसके घर जाकर बच्चे की खूब सेवा की जिससे बच्चा ठीक हो गया व अपने स्वाभिमान के कारण बच्चे को सेठ के पास ही छोड़कर

महिला भागकर रोती हुई मंदिर व झोंपड़ी के पास चली गई। सेठ महिला की इस दिव्यांगता व त्याग से उसके चरणों में गिर पड़ा व जीवन भर उसका कायल रहा।

'रोशनी से दूर' कहानी में दिव्यांगों के प्रति व्याप्त सामाजिक कटुता का वर्णन किया है–''सोचा कहूं, जब तुम कुछ और बड़े होंगे तो महसूस करोंगे कि तुम्हारे साथ कितना खौफनाक मजाक किया गया है। तुम्हारे आसपास की चीजें गतिशील होंगी और तुम एक स्थान में बधे होंगे। तुम्हारी पूरी जिन्दगी एक नारकीयता को समर्पित होंगी। शायद किसी दिन तुम यह भी पूछोंगे कि चलना क्या होता है?[15]

उस्मानिया कहानी में काले रंग की विकलांगता पर कटाक्ष किया गया है–''हमाराजादी! निकल मेरे घर से–मैं काला भैंसा हूं, काणा हूं, बौना हूं, तो किसी रहीश के घर में घुस जा। मैंने तुझे तलाक दिया–तलाक दिया–तकाल दिया।''[16]

इस प्रकार 'पोलियों' कहानी में भी दिव्यांगता को न पहचानने पर यथार्थ निरूपण किया है–''कुछ लोग मेरे साथ सहानुभूति जतलाते है, अपने भीतर दिल रखने के प्रमाण देते है। मुझे यह घिनौने स्तर की बात लगती है।''[17]

कहानी में श्रवण विकलांग कि समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है–''मेरी तो किस्तम फूट गई। तुम्हारे पल्ले पड़कर जब से आयी हूं मैंने इस घर में सुख नहीं देखा। पहले गूंगीयों को पालती रही अब इस गूंगे को।''[18]

'इरा' नामक कहानी में लेखक ने सिंघल इरा नामक अस्ति विकलांग लड़की की दिव्यांगता का निरूपण किया गया है और आई.ए.एस. बनने के लिए उसके द्वारा किये गये परिश्रम का निरूपण किया गया है जो उसकी दिव्यांगता का प्रमाण है ताकि समाज में उसका लोहा माना और वह एक आदर्श के रूप में आज स्थापित है। निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है–''मुझे अपने ऊपर पूर्ण विश्वास था। मुझे अपने अन्दर की शक्ति पर भरोसा था। कुछ न कुछ करने की ताकत थी। कुछ विशेष करने की क्षमता थी। मैंने अपने लिए लक्ष्य निर्धारित कर लिया था और उसे प्राप्त करने के लिए गंभीरता पूर्ण प्रयास किये और सफलता हासिल की। प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में विशेष प्रकार की क्षमताएं होती है चाहे वह सामान्य व्यक्ति हो या दिव्यांग व्यक्ति। मैंने दिव्यांग होकर भी अपने अन्दर छिपी हुई शक्तियों को पहचाना और निखारा। तभी मैं सिविल सर्विस परीक्षा की टॉपर बन पाई।''[19] अतः स्पष्ट है कि दिव्यांग स्त्रियों की क्षमता को पहचानने की जरूरत है। उनमें शक्ति तो है उसको निखारने की आवश्कता है। समाज दिव्यांग स्त्रियों की क्षमता को न पहचानकर उन्हें उपेक्षित दृष्टि देखता है। इसी प्रकार दिव्यांग स्त्रियों के यौन शोषण का वर्णन भी स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानियों में किया गया है जो निम्न पंक्तियों से स्पष्ट है–''मंद बुद्धि तथा मानसिक विकलांगता से ग्रस्त महिलाओं को अधिक गहन अपमान सहना पड़ता है। इसके पीछे समझ यह है कि यदि उनका यौन शोषण किया गया तो भी वे गर्भवती नहीं होती–...स्थिति खतरनाक रूप से असंतुलित है।''[20] इस सन्दर्भ में सूसन विण्डेल ने भी लिखा है–''एक विकलांग लड़की का शरीर एक ऐसा शरीर है जो समाज द्वारा ठुकराया गया है, अस्वीकृत है जो एक ऐसा धन है, खोटे सिक्के की तरह विवाह नामक बाजार के मेले में नहीं चल सकता। इसलिए इस शरीर को नकारात्मक रूप से देखा जा सकता है।''[21] इस प्रकार स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी में दिव्यांग विमर्श एक नये विमर्श के रूप में चित्रित हो रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. मधुआ, जयशंकर प्रसाद, प्रसाद ग्रंथावली, पृष्ठ–101
2. विव्यांग विमर्श की कहानियां, दिव्यांग प्रकाशन, उत्तर प्रदेश, 2014, पृष्ठ–26
3. धर्मवीर भारती, दिव्यांग विमर्श की कहानियां, दिव्यांग प्रकाशन उत्तर प्रदेश, पृष्ठ–27
4. वही, पृष्ठ–284.
5. रांगेय राघव, वही, पृष्ठ–29
6. विकलांग विमर्श की कहानियां, अखिल भारतीय चेतना परिषद्, छत्तीसगढ़, पृष्ठ–81
7. दिव्यांग विमर्श की कहानियां, दिव्यांग प्रकाशन उत्तर प्रदेश, पृष्ठ–30
8. ममता कालिया की प्रतिनिधि कहानियां, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–30
9. विकलांग विमर्श, प्रीति दुबे, ग्रंथलोक, दिल्ली, पृष्ठ–31
10. दिव्यांग विमर्श की कहानियां, दिव्यांग प्रकाशन उत्तर प्रदेश, पृष्ठ–30
11. वही, पृष्ठ–34
12. विकलांग विमर्श की कहानियां, अखिल भारतीय चेतना परिषद्, छत्तीसगढ़, पृष्ठ–60
13. वही, पृष्ठ–52
14. अनमोल भेट, रवीन्द्रनाथ टैगोर की कहानियां, कान्हा पब्लिशिंग हाउस बिहार, पृष्ठ–13
15. वही, पृष्ठ–54
16. वही, पृष्ठ–55
17. विकलांग जीवन की कहानियां, संम्पादक डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल, बिजनौर, पृष्ठ–41
18. वही, पृष्ठ–42
19. इरा, दिव्यांग विमर्श की कहानियां, दिव्यांग साहित्य अकादमी, उत्तर प्रदेश, पृष्ठ–38
20. समकालीन कहानी और उपेक्षित समाज, डॉ. प्रेम सिंह, श्रीनटराज प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–41
21. वही, पृष्ठ–39